Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-29*

भारतीय ज्ञान परंपरा से सतत विकास का मार्ग:प्रशासनिक शब्दावली से ग्रामीण व्यवहार तक

डॉ. एस. एल. ईरवार, शोधनिर्देशक, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग पी.एम.सी.ओ.ई., शा. राजीव गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंदसौर, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश

शशांककदम, शोधार्थी, भूगोल विभाग, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश

शोधसार:

भारतीय ज्ञान परंपरा ने सहस्र वर्षों से भारतीय समाज में ज्ञान की चेतना को प्रज्वलित किया है। ऐसे में भारतीय सामाजिक मूल्यों में सतत विकास की अवधारणा का परिलक्षित होना आश्चर्य का विषय नहीं है। यजुर्वेद का 'स्वस्ति वाचन' मंत्र, जो सभी शुभ कार्यों में दोहराया जाता है, उसके अंत में आकाश, अंतरिक्ष (वायुमंडल), पृथ्वी, जल (स्थलमंडल), औषधि और वनस्पति (जैवमंडल) सहित संपूर्ण प्रकृति की शांति की कामना की जाती है। यह वैदिक चेतना वर्तमान वैश्विक पर्यावरणीय चिंताओं का प्राचीनतम समाधान प्रस्तुत करती है।

वास्तविकता यह है कि भारतीय ग्रामीण समाज आधिकारिक भाषा और तकनीकी शब्दावलियों से उतना ही दूर है, जितना कि वह भारतीय ज्ञान परंपरा से निकट है। वर्तमान में ग्रामीण समाज सतत विकास की अवधारणा को एक विदेशी विचार तथा मात्र नीतिगत सरकारी प्रयोजन के रूप में देखता है, जिससे वह अपना स्वाभाविक जुड़ाव अनुभव नहीं कर पाता। इसीलिए, इस शोध कार्य में भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सतत विकास की अवधारणा और लक्ष्यों का अध्ययन किया गया है, जिसके माध्यम से भारत की विशाल ग्रामीण आबादी को सतत विकास के लक्ष्यों से सहज रूप से जोड़ा जा सके।

यह शोध स्थापित करता है कि सतत विकास लक्ष्यों के प्रति जागरूकता अभियान यदि औपचारिक भाषणों और जटिल प्रशासनिक शब्दावलियों के स्थान पर भारतीय ज्ञान परंपरा एवं लोक-सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से प्रसारित किए जाएँ, तो यह अवधारणा केवल सरकारी नीति न रहकर एक व्यापक 'जन-आंदोलन' का रूप ग्रहण कर सकती है; जिससे सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति का मार्ग अधिक सुदृढ़ हो सके।

मुख्यशब्द:भारतीय ज्ञान परंपरा, सतत विकास लक्ष्य, ग्रामीण भारत, स्वस्ति वाचन, प्रशासनिक शब्दावली।

प्रस्तावना:

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

औद्योगिक क्रांति तथा द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विश्व में संसाधनों के तीव्र दोहन की प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हो गई। इस प्रतिस्पर्धा ने मानव को आर्थिक समृद्धि तो प्रदान की, परंतु इसके प्रतिकूल प्रभाव वर्तमान समय में अंधाधुंध औद्योगिकीकरण, तीव्र शहरीकरण, अनियोजित संसाधन दोहन, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन तथा जैव-विविधता ह्रास जैसी समस्याओं के रूप में दिखाई दे रहे हैं। इन वैश्विक संकटों के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र (UN) द्वारा वर्ष 2015 में 'सतत विकास लक्ष्यों' (SDGs) का निर्धारण किया गया, जिसके अंतर्गत वर्ष 2030 तक गरीबी, भुखमरी, लैंगिक असमानता, स्वच्छ जल तथा पर्यावरणीय संतुलन सहित 17 प्रमुख लक्ष्यों की प्राप्ति का संकल्प लिया गया। भारत भी इन लक्ष्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए नीति आयोग तथा विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं के माध्यम से इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

"भारत की आत्मा गाँवों में बसती है" , किंतु वर्तमान परिदृश्य में सबसे बड़ी विसंगति यह है कि सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु निर्मित नीतियाँ, प्रशासनिक दिशानिर्देश तथा सरकारी विज्ञापन अत्यधिक तकनीकी, क्लिष्ट और जटिल भाषा में तैयार किए जा रहे हैं। अंग्रेज़ी से प्रत्यक्ष अनुवादित शब्दावली जैसे— 'पारिस्थितिकी तंत्र' , 'सस्टेनेबिलिटी' अथवा 'कार्बन फुटप्रिंट' —भारत की विशाल ग्रामीण आबादी के लिए पराई और नीरस प्रतीत होती है। जब तक नीतियों की भाषा जनसामान्य की लोक-भाषा और सांस्कृतिक चेतना से नहीं जुड़ती, तब तक ग्रामीण समाज इन योजनाओं से स्वयं को अलग-थलग अनुभव करता है। परिणामस्वरूप, ये नीतियाँ प्रशासनिक दस्तावेजों और औपचारिक बैठकों तक सीमित रह जाती हैं तथा व्यापक जन-आंदोलन का रूप नहीं ले पातीं।

अतः इस शोध का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा तथा सामाजिक मूल्यों में पूर्व से विद्यमान सतत विकास की अवधारणाओं का अध्ययन करना तथा उनका भारतीय संदर्भानुकूल प्रस्तुतीकरण करना है, ताकि ग्रामीण भारतीय समाज भी इन मूल्यों को अपने व्यावहारिक जीवन में सहज रूप से अपनाकर वैश्विक पर्यावरणीय संरक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभा सके।

शोधअंतराल:

1. पूर्ववर्ती शोधों में इस तथ्य पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया कि जटिल प्रशासनिक शब्दावली ग्रामीण समाज और नीतियों के मध्य दूरी उत्पन्न करती है।
2. प्राचीन भारतीय पर्यावरणीय दर्शन पर वैचारिक अध्ययन तो उपलब्ध हैं, किंतु उन्हें आधुनिक 17 सतत विकास लक्ष्यों के साथ क्रमबद्ध रूप से जोड़कर कोई व्यावहारिक ढाँचा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधकेउद्देश्य:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के प्राचीन ग्रंथों में निहित सतत विकास संबंधी अवधारणाओं का अध्ययन एवं प्रलेखन करना।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

2. संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों का भारतीय संदर्भानुकूल प्रस्तुतीकरण करते हुए उनका ग्रामीण व्यवहार से प्रत्यक्ष अंतर्संबंध स्थापित करना।

शोधप्रविधि:

यह अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसके अंतर्गत वेद, उपनिषद, महाभारत, भगवद्गीता, पुराण तथा धर्मसूत्रों जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही आधुनिक शोध लेखों, नीति आयोग की रिपोर्टों, ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा समकालीन अकादमिक स्रोतों का भी अध्ययन किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सतत विकास लक्ष्यों का विश्लेषण:

संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्य वस्तुतः उन मानवीय एवं पर्यावरणीय मूल्यों का वैश्विक दस्तावेजीकरण हैं, जिन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा ने सहस्रों वर्ष पूर्व अपने मूल में समाहित किया था। वर्तमान प्रशासनिक नीतियों की सबसे बड़ी सीमा यह है कि वे इन लक्ष्यों को अत्यंत क्लिष्ट और तकनीकी शब्दावलियों के माध्यम से ग्रामीण समाज तक पहुँचाने का प्रयास करती हैं। इसके विपरीत, यदि इन वैश्विक लक्ष्यों को भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों, लोक-परंपराओं तथा ग्रामीण व्यवहार के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए, तो यह स्वाभाविक जन-आंदोलन का रूप ग्रहण कर सकते हैं।

लक्ष्य1-शून्यनिर्धनता

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 117, मन्त्र 5 (दानस्तुति सूक्त)।

मूल पाठ: "पृणीयादित्नाथमानाय तव्यान द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: प्रशासनिक स्तर पर प्रयुक्त 'पोवर्टी एलिविएशन' जैसे तकनीकी शब्द ग्रामीण चेतना के लिए अमूर्त हैं। ऋग्वेद का यह मूल मन्त्र स्पष्ट निर्देश देता है कि सामर्थ्यवान व्यक्ति को धन की याचना करने वाले निर्धन व्यक्ति की सहायता अवश्य करनी चाहिए क्योंकि धन का चक्र रथ के पहिए के समान घूमता रहता है। ग्रामीण समाज में प्रचलित 'परस्पर सहयोग' और 'दान की महिमा' का मूल दर्शन यही है, जो समाज के अंतिम व्यक्ति को मुख्यधारा से पीछे छूटने नहीं देता।

लक्ष्य2-शून्यभुखमरी

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 117, मन्त्र 6 (अक्ष सूक्त) एवं तैत्तिरीय उपनिषद, भृगुवल्ली, अनुवाक 10, मन्त्र 1।

मूल पाठ: "मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः..." तथा "अन्नं बहु कुर्वीत तद्व्रतम्॥"

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'न्यूट्रिशन पॉलिसी' जैसे शब्द ग्रामीण चेतना के लिए परायें हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा अन्न को मात्र एक भौतिक वस्तु न मानकर 'अन्न ब्रह्म' के रूप में प्रतिष्ठित करती है। तैत्तिरीय उपनिषद का सूक्त समाज को यह आदेश देता है कि अन्न का प्रचुर उत्पादन करना समाज का सामूहिक व्रत होना चाहिए। ग्रामीण समाज में प्रचलित 'अन्न देव का आदर' और उत्सवों पर 'सामूहिक भोज (भंडारा/लंगर)' की परंपरा

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

इसी लक्ष्य का व्यावहारिक धरातल है।

लक्ष्य3-उत्तमस्वास्थ्यऔरकल्याण

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: गरुड़ पुराण, पूर्व खण्ड, अध्याय 230, श्लोक 47 एवं चरक संहिता, सूत्रस्थान, अध्याय 30, श्लोक 26।

मूल पाठ: "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः..." तथा "प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं च॥"

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: प्रशासनिक स्तर पर प्रयुक्त 'समग्र कल्याण' शब्दावली की तुलना में ग्रामीण समाज "पहला सुख नीरोगी काया" के लोकोक्तिपरक सिद्धांत को सहजता से स्वीकार करता है। चरक संहिता का यह मूल सूत्र स्पष्ट करता है कि आयुर्वेद का प्रथम उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना है, न कि केवल बीमारी का इलाज। ग्रामीण अंचल में घरेलू स्तर पर पारंपरिक जड़ी-बूटियों (तुलसी, नीम, गिलोय) का रोपण इसी दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

लक्ष्य4-गुणवत्तापूर्णशिक्षा

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: विष्णु पुराण, अंश 1, अध्याय 19, श्लोक 41 एवं भर्तृहरि कृत नीतिशतकम्, श्लोक 16।

मूल पाठ: "सा विद्या या विमुक्तये..." तथा "विद्या विहीनः पशुः॥"

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'लर्निंग आउटकम्स' जैसे शब्द ग्रामीण परिवेश के लिए यांत्रिक हैं। विष्णु पुराण का यह अकादमिक संदर्भ स्थापित करता है कि वास्तविक शिक्षा वही है जो बंधनों से मुक्ति (अज्ञान और संकीर्णता से स्वतंत्रता) दिलाए। ग्रामीण भारत में नैतिक मूल्यों और पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से व्यावहारिक मूल्य सिखाना इसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का व्यावहारिक रूप है।

लक्ष्य5-लैंगिकसमानता

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक 56 एवं बृहदारण्यक उपनिषद, अध्याय 1, ब्राह्मण 4, मन्त्र 3 (अर्धनारीश्वर चेतना)।

मूल पाठ: "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'लैंगिक मुख्यधारा' जैसे प्रशासनिक शब्द ग्रामीण महिलाओं को अपनी विकास यात्रा से नहीं जोड़ पाते। बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार, परम पुरुष ने स्वयं को दो समान भागों में विभाजित किया, जिससे पति और पत्नी (स्त्री और पुरुष) का अस्तित्व बना। यह अर्धनारीश्वर का सिद्धांत स्थापित करता है कि सृष्टि का संचालन दोनों की पूर्ण समानता पर निर्भर है। ग्रामीण कृषि-अर्थव्यवस्था में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका को इस दर्शन से जोड़ा जा सकता है।

लक्ष्य6-स्वच्छजलऔरस्वच्छता

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 23, मन्त्र 19 (आपः सूक्त) एवं मत्स्य पुराण, अध्याय 59, श्लोक 18।

मूल पाठ: "आपः शिवतमा रसः..." तथा "दसकूपसमा वापी दसवापीसमो ह्रदः..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'जल संसाधन प्रबंधन' जैसी शब्दावलियां ग्रामीण समुदाय के लिए नीरस हैं। मत्स्य पुराण का यह श्लोक

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

जल संरचनाओं का महत्व स्पष्ट करते हुए कहता है कि दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब और दस तालाबों के बराबर एक पुत्र (वृक्ष) होता है। ग्रामीण भारत में कुआं, बावड़ी और तालाबों के निर्माण व उनके संरक्षण को पुण्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का कार्य मानना इसी स्वच्छ जल के लक्ष्य का लोक-रूप है।

लक्ष्य7-किफायतीऔरस्वच्छऊर्जा

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 1, मन्त्र 1 (अग्नि सूक्त) एवं यजुर्वेद, अध्याय 31, मन्त्र 19 (सूर्य-ऊर्जा संचेतना)।

मूल पाठ: "अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'रिनेवेबल एनर्जी' जैसी तकनीकी शब्दावली के स्थान पर ग्रामीण समाज ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों की महत्ता को बहुत गहराई से समझता है। ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र अग्नि को ब्रह्मांड की मुख्य पुरोहित ऊर्जा मानता है। ग्रामीण परिवेश में पारंपरिक रूप से जैविक अपशिष्ट (जैसे गोबर गैस) का उपयोग, धूप का प्राकृतिक संचय और सौर ऊर्जा को 'सूर्यनारायण की कृपा' के रूप में स्वीकार करना इसी स्वच्छ ऊर्जा का सहज लोक-प्रतिमान है।

लक्ष्य8-सम्मानजनककार्यऔरआर्थिकविकास

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 34, मन्त्र 13 (अक्ष सूक्त) एवं भगवद्गीता, अध्याय 3, श्लोक 19।

मूल पाठ: "अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित्कृषस्व..." तथा "तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: संयुक्त राष्ट्र की 'इकोनॉमिक ग्रोथ' की तुलना में ग्रामीण समाज श्रम के सम्मान को बेहतर समझता है। ऋग्वेद का यह मन्त्र जुआ या भाग्य के भरोसे बैठना छोड़कर स्वयं कृषि कर्म (सम्मानजनक भौतिक श्रम) करने का सीधा उपदेश देता है। गांवों में 'श्रमदान' की परंपरा और कुटीर उद्योगों के माध्यम से स्वावलंबी अर्थव्यवस्था का निर्माण करना इसी लक्ष्य को धरातल पर चरितार्थ करता है।

लक्ष्य9-उद्योग,नवाचारऔरबुनियादीढांचा

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 53, मन्त्र 10 (शिल्प सूक्त) एवं समरांगण सूत्रधार (भोजदेव कृत), अध्याय 44 (यन्त्र लक्षण खंड)।

मूल पाठ: "त्वां त्वष्टा जनयद् विश्वमकरोद्..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'इंडस्ट्रियलाइजेशन' जैसे भारी-भरकम शब्द ग्रामीण समाज को नीरस लगते हैं। प्राचीन शिल्प सूक्त स्थापत्य और स्वदेशी शिल्प कला को राष्ट्र के बुनियादी ढांचे का आधार मानते हैं। ग्रामीण कारीगरों द्वारा स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके किए जाने वाले स्वदेशी नवाचार (जुगाड़ और स्थानीय तकनीक) तथा सामुदायिक भवनों व कुओं का निर्माण इस लक्ष्य का शुद्ध भारतीय व्यावहारिक रूप है।

लक्ष्य10-असमानतामेंकमी

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 191, मन्त्र 2 (संगठन सूक्त)।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

मूल पाठ: "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्..."
व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: प्रशासनिक 'सोशल इंक्लूजन' शब्दों की जगह ग्रामीण चेतना ऋग्वेद के इस महान सूत्र को समझती है कि "हम सब साथ चलें, साथ बोलें और हमारे मन एक हों।" ग्रामीण समाज में सामाजिक ऊंच-नीच को मिटाने के लिए संतों की समरसता वाणी का गायन और 'चौपाल' पर सामूहिक निर्णय लेने की लोकतांत्रिक व्यवस्था, समाज के सभी वर्गों के बीच की दूरी को कम करने का सबसे सशक्त लोक-माध्यम रही है।

लक्ष्य11-संधारणीयशहरऔरसमुदाय
वैदिक/अकादमिक संदर्भ: कौटिल्य अर्थशास्त्र, अधिकरण 2, अध्याय 1 (जनपद निवेशः) एवं वास्तुशास्त्र (मयमतम्), अध्याय 9 (ग्राम लक्षण)।
व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'सस्टेनेबल सिटीज' की तुलना में भारतीय ज्ञान परंपरा में 'ग्राम-नियोजन' और 'बसावट' का एक प्राकृतिक मॉडल रहा है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र स्पष्ट निर्देश देता है कि ग्रामीण बसावटों के आसपास गोचर भूमि (चरागाह) और जल निकायों (तालाब) का होना अनिवार्य है। मिट्टी-बांस जैसी स्थानीय संधारणीय सामग्रियों से घर बनाना इसी संधारणीय समुदाय का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

लक्ष्य12-उत्तरदायित्वपूर्णउपभोगएवंउत्पादन
वैदिक/अकादमिक संदर्भ: ईशावास्योपनिषद, मन्त्र 1।
मूल पाठ: "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥"
व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: यह सतत विकास के अंतर्गत वैश्विक स्तर पर सबसे महत्वपूर्ण और केंद्रीय लक्ष्य है। ईशावास्योपनिषद का यह मन्त्र स्पष्ट निर्देश देता है कि प्रकृति के संसाधनों का उपभोग 'त्याग की भावना' के साथ सीमित रूप में किया जाना चाहिए, न कि अंधाधुंध दोहन (शोषण) के रूप में। ग्रामीण जीवन शैली मूलतः अपव्यय-विरोधी रही है, जहाँ प्रकृति से केवल न्यूनतम आवश्यकता के अनुसार ही संसाधन ग्रहण किए जाते हैं।

लक्ष्य13-जलवायुकार्रवाई
वैदिक/अकादमिक संदर्भ: शुक्ल यजुर्वेद संहिता, अध्याय 36, मन्त्र 17 (शांति पाठ)।
मूल पाठ: "द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः..."
व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'जलवायु परिवर्तन' जैसे शब्द ग्रामीण आबादी के लिए तकनीकी रूप से अमूर्त हैं। यजुर्वेद के इस शांति पाठ में संपूर्ण ब्रह्मांड (आकाश, अंतरिक्ष, जल, औषधि और वनस्पति) की जैव-पारिस्थितिकी को अक्षुण्ण रखने की जो प्रार्थना की गई है, वह आधुनिक 'पारिस्थितिक संतुलन' का प्राचीनतम रूप है। ग्रामीण समाज में पीपल, बरगद, नीम और तुलसी जैसे वृक्षों की पूजा पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोक-चेतना को जाग्रत करती है।

लक्ष्य14-जलकेनीचेजीवन
वैदिक/अकादमिक संदर्भ: शतपथ ब्राह्मण, काण्ड 1, प्रपाठक 8, ब्राह्मण 1 (मत्स्य अवतार आख्यान) एवं पद्म पुराण, सृष्टि

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

खण्ड, अध्याय 18।

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'मरीन इकोसिस्टम' जैसे प्रशासनिक नैरेटिव ग्रामीणों के लिए अमूर्त हैं। शतपथ ब्राह्मण में वर्णित विष्णु का प्रथम अवतार 'मत्स्य' (मछली) के रूप में होना यह सिखाता है कि जल के भीतर के जीवों की रक्षा संपूर्ण वैश्विक पारिस्थितिकी की रक्षा के लिए आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में नदियों और तालाबों में रहने वाले जीवों (मछली, कछुए) को पवित्र मानकर उन्हें दाना डालना इसी लक्ष्य का व्यावहारिक रूप है।

लक्ष्य15-भूमिपरजीवन

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: अथर्ववेद संहिता, काण्ड 12, सूक्त 1, मन्त्र 12 (भूमि सूक्त)।

मूल पाठ: "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'बायोडायवर्सिटी' जैसे भारी शब्द ग्रामीणों के लिए कठिन हैं। किंतु, जब उन्हें अथर्ववेद के इस दर्शन से जोड़ा जाता है कि "पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं", तो थल पर जीवन और वनों का संरक्षण एक भावनात्मक कर्त्तव्य बन जाता है। जीवों के प्रति दया (गौ-ग्रास, चींटियों को अन्न देना) सीधे तौर पर जैव-विविधता के संरक्षण की व्यावहारिक लोक-पद्धतियां हैं।

लक्ष्य16-शांति, न्यायऔरमजबूतसंस्थाएं

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: महाभारत, शांति पर्व, अध्याय 59 (राजधर्मानुशासन पर्व) एवं ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 191, मन्त्र 4।

मूल पाठ: "समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः..."

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: संयुक्त राष्ट्र के 'पीसफुल एंड इंक्लूसिव सोसाइटी' जैसे प्रशासनिक नैरेटिव की तुलना में ग्रामीण मानस "पंच परमेश्वर" की न्याय व्यवस्था को अधिक गहराई से समझता है। ऋग्वेद का यह सूत्र कहता है कि "तुम्हारे संकल्प समान हों और तुम्हारे हृदय समान हों।" ग्रामीण अंचल की यह पारंपरिक व्यवस्था बिना किसी जटिल अदालती प्रक्रिया के, स्थानीय स्तर पर शांति और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना का सबसे सुलभ माध्यम रही है।

लक्ष्य17-लक्ष्योंकेलिएभागीदारी

वैदिक/अकादमिक संदर्भ: महोपनिषद, अध्याय 6, श्लोक 71।

मूल पाठ: "उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

व्याख्या एवं ग्रामीण अनुप्रयोग: 'वैश्विक भागीदारी' जैसे प्रशासनिक नैरेटिव की तुलना में सामूहिक प्रार्थनाओं में बोला जाने वाला वाक्य—"विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो"—वैश्विक भागीदारी की सबसे सहज लोक-अभिव्यक्ति है। जब महोपनिषद के इस श्लोक के अनुसार पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखा जाता है, तो सतत विकास के सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करना अत्यंत सुगम हो जाता है।

परिणाम:

1. इस शोध से स्पष्ट होता है कि सतत विकास की अवधारणा भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राचीन काल से ही निहित रही है।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा, लोक-भाषा और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से सतत

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

विकास लक्ष्यों का प्रसार ग्रामीण society में अधिक सहज स्वीकार्यता और जनभागीदारी सुनिश्चित कर सकता है।

3. शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय संदर्भानुकूल प्रस्तुतीकरण द्वारा सतत विकास की अवधारणा को केवल सरकारी नीति न बनाकर एक व्यापक जन-आंदोलन के रूप में विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि सतत विकास की अवधारणा भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है। वेद, उपनिषद, पुराण तथा भारतीय लोक-परंपराओं में प्रकृति संरक्षण, सामाजिक समरसता, संतुलित उपभोग तथा सामूहिक कल्याण जैसे सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है, जो वर्तमान वैश्विक विकास लक्ष्यों के मूल आधार हैं।

अध्ययन यह भी सिद्ध करता है कि ग्रामीण समाज भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, लोक-भाषा तथा पारंपरिक व्यवहारों से अधिक सहज रूप से जुड़ता है, जबकि जटिल प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली उसे नीतियों से दूर कर देती है। इसलिए यदि सतत विकास संबंधी जागरूकता भारतीय ज्ञान परंपरा और स्थानीय सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से प्रसारित की जाए, तो यह केवल सरकारी योजना न रहकर एक व्यापक जन-आंदोलन का रूप ग्रहण कर सकती है।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक सतत विकास लक्ष्यों का समन्वय भारत में पर्यावरणीय संतुलन, सामाजिक न्याय, ग्रामीण सहभागिता तथा सतत जीवन-शैली को सुदृढ़ करने का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकता है।

संदर्भसूची:

1. अग्रवाल, पी. (2021). "वैदिक वास्तुकला और कौटिल्य का ग्राम नियोजन मॉडल". भारतीय इतिहास और संस्कृति शोध पत्रिका, 14(2), 45–52.

2. अज्ञात लेखक. (2025). "ईशावास्योपनिषद और सीमित उपभोग का सिद्धांत: आधुनिक पर्यावरण का आधार". वेदांत रिसर्च गेट. https://www.researchgate.net/publication/301911211_Ishavasya_Upanishad_and_Sustainable_Consumption

3. आचार्य, एस. (2022). "मनुस्मृति और उपनिषदों में नारी: अर्धनारीश्वर चेतना और लैंगिक समानता". वैदिक थॉट्स ब्लॉग. https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/education/gender-equality-in-ancient-indian-tradition

4. उपाध्याय, के. एवं शास्त्री, एम. (2024). "शिल्प सूक्त और समरांगण सूत्रधार में भारतीय इंजीनियरिंग और बुनियादी ढाँचा". स्वदेशी शिल्प कला समीक्षा, 8(1), 112–119।

5. गर्ग, एस. & सिंघल, आर. (2025). "आज के आधुनिक समाज में सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्रासंगिकता का अन्वेषण". IJIRMF, 11(3), 121–126।

6. जोशी, आर. (2023). "ऋग्वेद का संगठन सूक्त: सामाजिक समरसता और असमानता

में कमी लाने का प्राचीन मार्ग". जागरण जोश. https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/organisation-sukta-and-social-inclusion

7. **तिवारी, पी.** (2024). "**शतपथ ब्राह्मण का मत्स्य अवतार आख्यान और जल के नीचे जीवन का संरक्षण". भारतीय संस्कृति और पर्यावरण पत्रिका**, 5(2), 89–96।

8. **द्विवेदी, ओ. पी.** (2000). "**भारतीय पर्यावरण चिन्तन और वेदान्त दर्शन". विश्व पर्यावरण समीक्षा**, 4(2), 115–128।

9. **नीति आयोग.** (2021). "**एसडीजी इंडिया इंडेक्स और डैशबोर्ड** 2020-21: **सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में साझेदारी". भारत सरकार नीति प्रतिवेदन.** https://www.niti.gov.in/sdg-india-index-2020-21

10. **पाठक, ए.** (2023). "**विष्णु पुराण और नीतिशतकम् में शिक्षा का दर्शन: सा विद्या या विमुक्तये". शैक्षिक शास्त्र समीक्षा**, 12(4), 201–210।

11. **भार्गव, एन.** (2022). "**ऋग्वेद का अक्ष सूक्त और भगवद्गीता: सम्मानजनक कार्य, श्रम की प्रतिष्ठा और कृषि कर्म". कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय शोध पत्रिका**, 31(2), 55–64।

12. **मिश्र, ए.** (2017). "**आज भी खरे हैं तालाब". गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली**, पृ. 42-58।

13. **मजुमदार, आर.** (2025). "**अथर्ववेद का भूमि सूक्त: जैव-विविधता और थल पर जीवन के प्रति एक भावनात्मक दृष्टिकोण". पर्यावरण और समाज जर्नल**, 16(1), 134–142।

14. **विकिपीडिया.** (2025, **जनवरी** 10). "**स्वस्ति वाचन और यजुर्वेद शांति पाठ". विकिपीडिया, द फ्री एन्साइक्लोपीडिया.** https://hi.wikipedia.org/wiki/**स्वस्ति_वाचन**

15. **विकिपीडिया.** (2025, **जनवरी** 10). "**आयुर्वेद और चरक संहिता का प्रयोजन". विकिपीडिया.** https://hi.wikipedia.org/wiki/**चरक_संहिता**

16. **विकिपीडिया.** (2025, **जनवरी** 10). "**मत्स्य पुराण और प्राचीन जल संसाधन प्रबंधन". विकिपीडिया.** https://hi.wikipedia.org/wiki/**मत्स्य_पुराण**

17. **विकिपीडिया.** (2025, **जनवरी** 10). "**वसुधैव कुटुम्बकम्: महोपनिषद". विकिपीडिया.** https://hi.wikipedia.org/wiki/**वसुधैव_कुटुम्बकम्**

18. **शर्मा, के.** (2022). "**भारतीय ज्ञान प्रणाली** (IKS): **एक परिचय". विद्या भारती संस्थान, नई दिल्ली**, पृ. 78-92।

19. **शास्त्री, वी.** (2023). "**ऋग्वेद का दानस्तुति सूक्त और शून्य निर्धनता की अवधारणा". वैदिक चेतना रिसर्च जर्नल**, 19(3), 102–108।

20. **सिंह, आर. बी.** (2018). "**ग्रामीण भारत में सतत विकास लक्ष्य और स्थानीय भाषा का महत्व". भारतीय भूगोल पत्रिका**, 34(1), 45–58।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

21. United Nations. (2015). "Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development". UN Publishing. https://sdgs.un.org/2030agenda

22. World Bank. (2020). "Localizing Sustainable Development Goals in Rural Landscapes". World Bank Group. https://www.worldbank.org/en/topic/agriculture/publication/localizing-sdgs-rural